रेडीमेड विचारों का अंबार है न्यू मीडिया, इसने हमारी विचारशीलता को अपाहिज बना दिया

दीपक वोहरा, पीएम के स्पेशल एडवाइज़र

गुलामी से उबरने में तीन पीढ़ियां गुज़र जाती हैं

मेरी मित्र हैं अलीमा आइरिस। अमेरिकन डिप्लोमैट हैं वो। एक किताब उन्होंने मुझे भेजी और उस पर लिखा 'अब विदेशी ताकतें भारत के विचारों पर कब्जा नहीं पा रहीं। भारत हाथी की गति से दौड़ रहा है। अब उसे कोई नहीं रोक पाएगा।' आपके इंदौर को ही देखिए। 1974 में पहली बार आया था मैं। फिर फरवरी 2018 में आया। गजब की सफाई और हर 10 मीटर पर भव्य इमारत। लेकिन यह सब एक दिन में नहीं हुआ। जनाब तीन पीढ़ियां लग गईं यह हिम्मत जुटाने में। गुलामी सबसे पहले आत्मविश्वास तोड़ती है। बंटवारे के समय लाहौर में हमारा जो घर छूटा उसके बदले में यहां घर मिलना था। दादा रोज निकल पढ़ते थे मालूमात करने। निराश हो लौट आते थे। कहते निकम्मी सरकार है। अंग्रेजी हुकूमत ऐसी न थी। उन्होंने जीवन इस सर्वाइवल में गुजार दिया। मैं थोड़ा उबरा गुलामी से। लेकिन आजाद तो मेरी चार साल की पोती है। उसके कॉन्फिडेंस ने ही मुझे अहसास कराया कि लंबी गुलामी से उबरने के बाद भी तीन पीढ़ियां लग जाती हैं खोया आत्मविश्वास पाने में। मीडिया के बारे में कहा आज यह तकनीक है, कल कोई इसे रौंदती हुई आगे निकल जाएगी।

जयप्रकाश चौकसे, वरिष्ठ फिल्म समीक्षक, स्तंभकार

सर्पिणी है तकनीक, सौ अंडे दे आधे खा जाती है

तकनीक गर्भवती सर्पिणी की तरह है जो एक बार में सौ अंडे देती है, लेकिन अधिकतर अंडे खुद ही खा जाती है। अभी यह तकनीक के विचारों पर कब्जा नहीं पा रही। भारत हाथी की गति से दौड़ रहा है। कल इसे रौंद दिया जाएगा। पुरातन पत्रकारिता महाभारत काल से व्यवहार में आ चुकी थी। संजय ने धृतराष्ट्र को युद्ध का पूरा हाल बताया था। सिनेमा और जर्नलिज्म भी एक दूसरे से जुड़े हैं। मधुर भंडारकर की फिल्म पेज थ्री की नायिका पत्रकार है। पत्रकार वो जो नंगी आवाज़ें सुन सके। सच को सूंघ सके। सोशल मीडिया का यह जर्नलिज्म प्रचलन में ज़रूर आया है लेकिन वो अभी इतना ताक़तवर नहीं हुआ है। खबर एक से दूसरे और दूसरे से तीसरे के पास पहुंचती है। खबर इस बीच पूरी तरह बदल जाती है। श्रीदेवी की मौत के मामले में यही हुआ। कभी नशेड़ू तो कभी बोनी को अपराधी की तरह दिखती खबरों ने उसे 100 बार मारा। ये डिजिटल माइन्ड्स जो धरती में फैला दी गई हैं ये हमें नुकसान भी पहुंचा रही हैं। आज न्याय पाने के दो ही जरिए हैं। एक न्यायालय और दूसरी पत्रकारिता। यह है पत्रकारों की ताकत। हालांकि यह भी है कि मोबाइल जर्नलिज्म ने काम आसान बहुत कर दिया है।

सईद अंसारी, पत्रकार

नंगी आवाज़ों को सुनिए उन्हें ताक़त दीजिए

जिस प्रोफेशन में हम हैं वो प्रोफेशन कम, मिशन ज्यादा है। अगर आप सिर्फ नौकरी करने के लिए यह कोर्स कर रहे हैं तो मान लीजिए कि पत्रकार नहीं बन सकेंगे। पत्रकारिता जुनून है, लेकिन हमें किसी के खिलाफ कुछ नहीं कहना। सच कहना है। दूसरों की आवाज बनना है। जिम्मेदारों को उनकी जिम्मेदारी का अहसास कराना है। अगर आप सोच रहे हैं कि कहीं से कोर्स करके आप पत्रकार बन जाएंगे तो यह धारणा गलत है। यदि सामाजिक विसंगतियों के खिलाफ कुछ करने को दिल करता करता है तो आप पत्रकार बन सकते हैं। अब जमाना न्यू मीडिया का है। आज खबर आपके स्मार्टफोन में है। लेकिन ट्रेडिशनल मीडिया की अपनी अहमियत है। हालांकि उसका स्वरूप बदलता जा रहा है। समय के साथ चलिए। वरना खत्म हो जाएंगे। और राह कोई भी हो, ईमानदारी सबसे बड़ी शर्त है दोस्तों। न्यू मीडिया जितना पॉपुलर हो रहा है, उससे कई ज्यादा उसकी आलोचना की जा रही है। फेक न्यूज का अंबार है। विश्वसनीयता पर सवाल उठते रहते हैं। आपके पास संभावनाएं कई हैं, सही रास्ता चुनिए और पूर्वाग्रहों से मुक्त हो निकल पड़िए।

मुकेश कुमार, लेखक-पत्रकार

जनता को आज प्रोडक्ट की तरह बेचा जा रहा है

आज अख़बार दिख भले ही रहे हैं लेकिन बच्चे इन्हें पढ़ नहीं रहे हैं। ख़तरा सिर्फ अख़बार को नहीं, टीवी को भी है। लोग नेटफ्लिक्स पर शिफ्ट हो गए हैं। कैम्ब्रिज एनैलिटिका ने फेसबुक से पांच करोड़ लोगों का डाटा निकाला। वो उसे बेच रहे थे। भारत की पॉलिटिकल पार्टीज़ को भी यह डाटा बेचा जा रहा था। जनता को प्रोडक्ट की तरह बेचा जा रहा है। यह गंभीर है। फाइनेंशियल रिकॉर्ड्स से लेकर गूगल हिस्ट्री तक का इस्तेमाल किया जा रहा है। कई देशों का पॉलिटिकल सीन इन पर निर्भर हो गया है। यहां तक कि पॉलिटिकल पार्टीज़ आपका सेक्शुअल ओरिएंटेशन भी बता सकती हैं। जर्मन फिलॉसफर जर्गन हेबरमास ने पब्लिक स्फीयर थ्योरी दी थी। पब्लिक स्फीयर यानी ऐसे विचारशील व जागरूक लोग जो मिलकर एक मजबूत जनमत बनाते हैं। डेमोक्रेटिक कल्चर के लिए यह बहुत जरूरी है। न्यू मीडिया फेक पब्लिक स्फीयर बना रहा है। सोशल मीडिया पर धीरे-धीरे एक सहमति बना जाती है कि यह सही है यह गलत। सूचनाओं और रेडीमेड विचारों का अंबार है न्यू मीडिया। पॉलिटिकल पार्टीज़ इसका फायदा उठा रही हैं।

विनय सिंघल, फाउंडर एंड सीईओ, विटीफीड

यूथ को जगह नहीं दी तो उसने नई जगहें तलाशी

रात 8 से 10 बजे के बीच कोई भी न्यूज चैनल चला लीजिए, हरेक पर प्राइम टाइम डिबेट होता है। पांच-छह बुद्धिजीवी देश के एजेंडे तय करते हैं। तर्क करते हैं। 180 चैनल्स में से एक पर भी यूथ को इस चर्चा में शामिल नहीं करते। जबकि देश की 65 फीसदी आबादी 35 से कम उम्र की है। भविष्य तो उनका दांव पर लगा है। उन्हें ही जगह नहीं दी जा रही है। ट्रेडिशनल मीडिया ने हमें जगह नहीं दी, इसलिए हमने नई जगहें तलाशी। बल्कि खुद बनाईं। न्यू ऐज मीडिया इसीलिए आगे बढ़ा क्योंकि उसने युवाओं को अपनी बात रखने का मौका दिया। पीएनबी घोटाले में हजारों करोड़ तो हमारे लूटे गए। क्या इस मुद्दे पर यूथ से बात नहीं करना चाहिए। विटिफीड की शुरुआत फनी कंटेंट से की थी हमने। एक दिन मैंने एक सवाल अपलोड किया कि भारत में चार चीजें बैन करना हो तो क्या करेंगे। 74% यूथ ने लिखा जाति आधारित आरक्षण। इस 65% जनरेशन को नजरअंदाज नहीं करेंगे तो ट्रेडिशनल मीडिया का अस्तित्व भी बना रहेगा और न्यू मीडिया भी बढ़ता रहेगा। वरना मुझे तो याद नहीं मैंने आखिरी बार अखबार कब पढ़ा था।

युवा पीढ़ी को आत्मविश्वास दें कि वे एक महान देश के नागरिक हैं

वैष्णव विद्यापीठ में आयोजित मीडिया कॉन्क्लेव में बोले पूर्व राजदूत दीपक वोहरा

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर • यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रोमा सब मिट गए जहां से, अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशां हमारा, कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी, सदियों रहा है दुश्मन दौर-ए-जमां हमारा, सारे जहां से अच्छा हिंदुस्तान हमारा। हम भारत में नहीं बसते, यहां हर शख्स के मन में भारत बसता है। वैष्णव विद्यापीठ में शनिवार को आयोजित मीडिया कॉन्क्लेव में पूर्व राजदूत दीपक वोहरा ने जब इस बात से उद्‌बोधन समाप्त किया तो ऑडियंस ने उन्हें स्टैंडिंग ओवेशन दिया। उनकी पंक्तियां खत्म होते ही हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा। अपने पूरे उद्‌बोधन में उनकी सिर्फ एक गुजारिश थी कि आने वाली पीढ़ी को ये आत्मविश्वास दें कि वे सबसे तेजी से बढ़ते राष्ट्र के नागरिक है। मीडिया कॉन्क्लेव में माखनलाल चतुर्वेदी विवि के प्रोफेसर मोनिका वर्मा,

सुरेंद्र पॉल, राजनीतिक पत्रकार अखिलेश शर्मा, विटीफीड वेबसाइट के को-फाउंडर विनय सिंघल, एंकर सईद अंसारी ने भी मुख्य वक्ता के रूप मे अपनी बात रखी। वोहरा ने कहा कि मेरी नातिन का जन्म अमरीका में हुआ और वह अभी चार साल की है, लेकिन उसमें गजब का आत्मविश्वास है। वह रेड सिग्नल पर मुझे कहती है, स्टॉप नाना। मेरा सवाल है कि क्या हम अपने बच्चों को इस तरह का आत्मविश्वास दे पाए है। अमरीका में बच्चों को हमेशा सिखाया जाता है कि वह ऐसे देश के नागरिक है जो आने वाले समय में दुनिया पर राज करने वाला है। हम बचपन से ही बच्चों को अपना देश समस्याओं से भरा बताते है जो उनके आत्मविश्वास को कम करता है। भष्ट्राचार जैसी समस्याएं सभी देशों में है, लेकिन हम अपने देश की छवि किस प्रकार की बनाते है, ये हम पर निर्भर करता है।

ट्रेडिशनल मीडिया को खतरा नहीं : न्यूज चैनल में उप-संपादक व एंकर सईद अंसारी ने कहा कि ये सच है कि नए मीडिया ने अपनी

जगह बनाई है, लेकिन इससे ट्रेडिशनल मीडिया को खतरा नहीं है। अखबार पढ़ना आज भी लोगों की आदत है।

मोबाइल बेस्ड हो गया जर्नलिज्म : वरिष्ठ पत्रकार अखिलेश शर्मा ने कहा कि अब जर्नलिज्म पूरी तरह से मोबाइल बेस्ड हो गया है। रिपोर्टिंग से लेकर एडिटिंग तक मोबाइल से की जा रही है। मोबाइल जर्नलिज्म से हम खबरों को आसानी से लोगों तक पहुंचा सकते हैं। इसके लिए सबसे जरूरी है स्किल बेस्ड रिपोर्टिंग करना और हर नई टेक्नोलॉजी से अपडेट रहना। प्रो. मोनिका वर्मा ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी 4जी यानी फोर्थ जनरेशन में जी रही है।